

Appendix - 5

- ३१७ -

परिशिष्ट - ५

धृशीवार नाटक संवादोमां अनेक नाटकना नाम सर्वजी लेवामां आवता हना।

अय मेरी खुबसुरन बला मय तेरा आशड दील इरोश तेरा अछूना दामन ऐसा
भुलभुलहीया हो गया हुं के जीससे अलीबाबा और अलाउद्दीन भी ताजजुब हो मेरी मोहीना
इस प्रतलभी दुनियामे इनसान ऐक गाड़िल मुसाफ़र है इस दोरंगी दुनिया के दावपेच
से हमारो शरीर बदमास, यदाबडावली और डायापलट के जेत देखकर, बांगे हझीसे
भाले नस्तीमे यत लंसौ. मै वोही यतनापूछू हुं जीससे अलीबाबा और आले इख्सीस थर रहेते
हय, अय मेरी अनसुया उष्ण सीतारे मंगरेलीया तेरे सैद नाम से तीरे हवस छोड़ने से
बाज आ और यह शेरदीलसे खूने नाहुड गगडाए ये हाथ उठा, बस मेरा रामायण
और महाभारत का खानमा हुआ, अभी तो दीवेर दीलमें ठड़ी आगड़ा शोला जल रहा हय,
ठोड़ बुज्जासहिना है तो तुं इशियाई सिनारा हय